

B.A. Part-I, Paper-II

Lecture - 25

Dr. Sumita Karmari, Assistant Professor
Mawani College Darbhanga

Date
14/5/20

TOPIC - दुर्लभ का आत्महत्या का
सिद्धांत

1897 में दुर्लभ की तीसरी महत्वपूर्ण पुस्तिकी उपलब्ध आत्महत्या की प्रकृति और पहचान की प्रकृति की व्याख्या और समाजिक की दृष्टि से उनका स्वभाव को कहें जा सकते हैं। दुर्लभ के 'आत्महत्या का सिद्धांत' आत्महत्या निम्न में अलग महत्वपूर्ण है। दुर्लभ के अनुसार आत्महत्या एक सामाजिक तथ्य है। आत्महत्या दुर्लभ के अनुसार एक वैयक्तिक घटना नहीं है, बल्कि सामाजिक घटना है। दुर्लभ ने आत्महत्या को परिभाषित करते हुए लिखा है "आत्महत्या का एक कारण है कि सभी व्यक्तियों के लिए किया जाता है जो स्वयं को नष्ट करने के लिए सकारात्मक (positive) या नकारात्मक

(Negative) ऐसे कार्य के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष परिणाम होते हैं जिनके कि सम्बन्ध में वह जानता है कि उनका वह कार्य सभी परिणाम (शून्य) को उत्पन्न करेगा। दुर्भाग्य से आत्महत्या का कारण भी समाज में अत्यंत सामाजिक कार्यिका में ही होता है। दुर्भाग्य के अनुसार आत्महत्या का अध्ययन एक तरह समाज में एक व्यापक रूप में है। सर्वोच्च है तो इसी तरह व्यक्ति का सामाजिकता से तथा सम्बन्ध है इसका व्यक्तिकरण भी करता है।

आत्महत्या में व्यक्ति यह निश्चय कर लेता है कि उसे अपना जीवन त्यागना है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आत्महत्या उसे करेगी जिसमें व्यक्ति के द्वारा जीवन के त्याग करने की इच्छा निर्मित है।

दुर्भाग्य से आत्महत्या से सम्बन्धित अध्ययन बहुत ही लीन होता है। इससे किता है -

1. आत्महत्या की घटना आतीरल सामाजिक कार्यों (Extrem Social Values) पर निर्भर है अथवा 'कर्तव्य' सामाजिक कार्यों पर। प्रथम प्रकार के कार्यों का महत्व विस्तृत नहीं अथवा बहुत कम है।

2. तबले बाफ आत्महत्या के सामाजिक कार्यों की विवेचना करने की ओर यह देखने का रूपल करना होगा कि ये कार्य अपना प्रकार किस रूप में करते हैं। ओर व्यक्तियों द्वारा की गई आत्महत्याओं के उनका क्या सम्बन्ध है?।

3. आत्महत्या के सामाजिक तत्व कौन से हैं और उनका सामाजिक तत्वों के साथ क्या सम्बन्ध है?।
आत्महत्याएं और

अन्यथा अवस्थाएं -
आत्महत्या की अनुरोध अवस्थाओं में जोड़ा गया है अनुरोध अवस्थाओं में दुर्भाग्य के सबसे पहले पाठान (Incapacity) और उसके बाद 'एकी-मात्र' (Monomania) की विचार है